प्रश्न :- रीतिकाल का वीरकाव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य बतायें ?

उत्तर :- शेषभाग :-

(4) श्रीधर या मुरलीधर :-

ये प्रयाग-निवासी ब्राह्मण थे। आचार्य शुक्ल के अनुसार इनका कविता-काल सन् 1790 के आस-पास माना जा सकता है। 'जंगनामा' इनका प्रमुख ग्रन्थ है। इसके अतिरिक्त इन्होंने कवि-विनोद, दूत-परीक्षा, भाषा-भूषण, श्रीकृष्ण-चरित, जैन मुनियों के चरित्र आदि ग्रन्थ तथा फुटकल छन्द भी रचे हैं। बहादुरशाह के बाद सत्ता-प्राप्ति के लिए जहाँदारशाह और फर्रुखसियर में युद्ध हुए, उनका सरस वर्णन 'जंगनामा' में किया गया है। यद्यपि कवि ने फर्रुखसियर-जैसे सामान्य कोटि के व्यक्तित्व को इस काव्य का नायक बनाया है, फिर भी सेना-प्रयाण, सज्ज, सामान और युद्ध का वर्णन इसमें पठनीय बन पड़ा है। इस रचना का उद्देश्य आश्रयदाता से धन-प्राप्ति रहा है, इसीलिए ऐतिहासिक दृष्टि से यह ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। साथ ही श्रीधर या मुरलीधर की काव्य-प्रतिभा की यह पहचान भी है। डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त के शब्दों में - "इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्रीधर में काव्य-प्रतिभा एवं भाषाधिकार की शक्ति पर्याप्त मात्रा में थी, किन्तु उसका विकास एवं उपयोग सम्यक् रूप में नहीं हो सका।"

(5) सूदन :-

सूदन मथुरा निवासी पंडित बसन्तराम चौबे के पुत्र थे और भरतपुर के महाराजा बदनसिंह के पुत्र सुजानसिंह (सूरजमल) के राज्याश्रित कवि थे। इनका 'सुजान-चरित'

नामक ग्रन्थ प्रख्यात है, जिसमें सुजानसिंह की पराक्रम-गाथा का वर्णन किया गया है। इसमें वर्णित युद्धों की घटनाएँ सन् 1745 से 1753 ई० के बीच की है। अतः इसका रचना-काल 1753 ई० के आस-पास माना जा सकता है। यह ऐतिहासिक वीर-प्रबन्ध-काव्य है, जिसमें सुजानसिंह के सात युद्धों का वर्णन किया गया है। आरम्भ में मंगलाचरण और उसके बाद संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों तथा महर्षियों का गुणगान करते हुए 175 कवियों की नामावली प्रस्तुत की गयी है। इसके पश्चात् सूरजमल का वंश-परिचय और उनके द्वारा लड़ी गयी सात लड़ाइयों का वर्णन किया गया है। ये सात लड़ाइयाँ—(1) सूरजमल द्वारा फतेहअली खाँ की सहायता (2) ईश्वरीसिंह की सहायता, (3) सलामत खाँ की पराजय (4) पठानों के विरुद्ध सफदरजंग की सहायता (5) राजा बहादुरसिंह की पराजय (6) दिल्ली की लूट और (7) बादशाही तथा मराठों की सम्मिलित सेना से सूरजमल का युद्ध। यह ग्रन्थ अपूर्ण प्रतीत होता है, क्योंकि इसके सातवें युद्ध में सुजानसिंह के साथ मराठों की लड़ाई की तैयारी तक का वर्णन करके अचानक ग्रन्थ समाप्त होता है। संभव है, इसी बीच कवि की मृत्यु हो गयी हो या शेष ग्रन्थ नष्ट हो गया हो। यद्यपि साहित्यिक दृष्टि से इस ग्रन्थ में अनेक त्रुटियाँ हैं, किन्तु कवि ने ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा की है। आचार्य शुक्लजी ने लिखा है—"सूरजमल की वीरता की जो घटनाएँ कवि ने वर्णित की हैं, वे कपोलकल्पित नहीं, ऐतिहासिक हैं। जैसे- अहमदशाह बादशाह के सेनापति असद

खाँ के फतहअली पर चढ़ाई करने पर सूरजमल का फतेहअली के पक्ष में होकर असद खाँ का ससैन्य नाश करना, मेवाड़, मांडौगढ़ आदि जीतना, संवत 1804 में जयपुर की ओर मरहठों को हराना, संवत 1805 में बादशाही सेनापति सलावत खाँ बख्सी को परास्त करना, संवत 1807 में शाही वजीर ~~[illegible]~~ सफदरजंग मंसूर की सेना से मिलकर बंगश पठानों पर चढ़ाई करना, बादशाह से लड़कर दिल्ली लूटना इत्यादि। इन सब बातों के विचार से 'सुजान-चरित का ऐतिहासिक महत्व भी बहुत कुछ है।''

इसमें वर्णित घटनाओं के वर्णन-विस्तार, सूचियों के प्रस्तुतीकरण, नाम-परिगणन-शैली एवं बहुज्ञता-प्रदर्शन की प्रवृत्ति के कारण-कथानक की सहज-गति में बाधा आ जाती है। साथ ही भाषा की तोड़-मरोड़ और फारसी शब्दों का बाहुल्य इसमें देखा जा सकता है। अनेक त्रुटियों के होते हुए भी ओज-गुण की प्रधानता, छन्द-वैविध्य, ऐतिहासिक तथ्य एवं समकालीन वातावरण के प्रस्तुतीकरण, काव्यात्मकता आदि गुणों के कारण निश्चित रूप से उपेक्षणीय ग्रन्थ नहीं है।

(शेष भाग बचा है)

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो०न०- 7909046087
दिनांक - 19.0.202